ISBN : 978-81-951034-0-9 Review on New Education Policy - 2020

नई शिक्षा नीती और समाज परिवर्तन

डॉ. एम. बी. बिराजदार

जवाहर कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर, ता. तुळजापूर

malinathbirajdar1008@gmail.com

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यो पुरी हो मनकी
एक दुसरे से ना मिल सके
यह विडंबना आहे जीवन की,

शिक्षा हमे विभिन्न प्रकार का ज्ञान और कौशल प्रदान करती है। यह सीखने की निरंतर धीमी और सुरक्षित प्रक्रिया है जो हमे ज्ञान प्राप्त करने में मदद करती है, यह निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है, जो हमारे जन्म के साथ ही शुरू हो जाती है और हमारे जीवन के साथ ही खत्म होती है शिक्षा मनुष्य के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है, यह मनुष्य को समाज मे प्रतिष्ठित करनेका कार्य करती है। इससे मनुष्य के अंदर मनुष्यता आती है।

समाज में शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व है विश्व मे जो नये अविष्कार हुए हैं और हो रहे हैं जिनका उपयोग आज मानव समाज कर रहा है, वह बिना शिक्षा संभव नहीं है, परिवर्तन संसार का नियम है। बदलते परिवेश के साथ इंसान को बदलने की आवश्यकता है इसलिये नई शिक्षा नीति को आत्मसात कर आत्मनिर्भर बनकर हमारे देश का गौरव बढाना प्रत्येक व्यक्ती का कर्तव्य है। डॉ. नागोराव कुंभार के शब्दों में, शिक्षा को परिभाषा में बांधने का प्रयत्न भारतीय और पाश्चात्य विद्वानोंने किया है। ग्रीक तत्त्ववेत्ता सॉक्रेटिस के अनुसार शिक्षा भ्रमनिरास और सत्यशोधन है। प्लेटो के अनुसार सत्यम शिवम सुंदरम हे जीवन के अंतिम मूल्य को समझकर अनुभव प्राप्त करने प्रक्रिया है, अरस्तु के अनुसार, सन्मार्ग से शिक्षा प्राप्त करने का साधन शिक्षा है । जर्मन तत्त्ववेत्ता हर्बर्ट के अनुसार शिक्षा का अर्थ शील संवर्धन है रुसो शिक्षा को व्यक्ती के अंतर्गत विकास को देखते है। हर्बर्ट स्पेन्सर के अनुसार सर्वांग सुंदर जीवन जीने की तयारी शिक्षा है।'' १

इस प्रकार शिक्षा मनुष्य जीवन का एक अनिवार्य अंग है। इसके बिना हमारा जीवन अधुरा है । शिक्षा एक अमृत रुपी फल है जिससे व्यक्ती का मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक व बौद्धिक विकास होता है। शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश बच्चो मे राष्ट्रीयता की भावना पैदा करना भी है, शिक्षा का मूल उद्देश ज्ञान प्राप्ति के लिए समर्पण भाव व निरंतर सीखने की प्रवृत्ती पैदा करना है, जो बच्चों के जीवन में अनुशासन, पारिवारिक समृद्धी, आर्थिक परिपक्वता, सामाजिकता, राष्ट्रीयता की भावना लाता है । डॉ. अरुण निगवेकर के शब्दों में, आज प्रगत और विकसित देशों में ज्ञान और संपत्ती में एक अलग रिश्ता निर्माण हुआ है। ज्ञान निर्मिती ज्ञान का वस्तू या सेवा मे रूपांतर निर्मित वस्तू अथवा सेवा विक्री मे से संपत्ती और उशी से देश का विकास यह समीकरण आज दुनिया मे प्रचलित हो रहा है और शिक्षा ज्ञान निर्मिती का साधन है.'' २

शिक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान से हम जीवन मे परिस्थितियों का सामना करने के लायक बनते है हमारे दृष्टिकोन मे परिपक्वता आती है शिक्षित होने से हमारा सामाजिक स्तर उंचा उठता है। हमे व्यावहारिकता आत्मविश्वास, सकारात्मकता परिवार के सदस्यों के बीच सामंजस्य मानव धर्म के कर्तव्य और देशों को समजना निभाना अधिका ग्यान शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होता है। शिक्षा से हमे हमारे जीवन का लक्ष्य निर्धारित करणे में सहायता मिलती है। लक्ष निर्धारण पश्चात हमारे कर्म व्यवहार, दृष्टिकोन व आचार विचार में स्थायी सकारात्मकता प्रदर्शित होने लगती है। इसके बिना हमारा जीवन सकारात्मक व स्थिर नहीं रहता। ऐसा प्रतीत होता है जैसे, भक्त बिना भगवान, ड्रायव्हर बिना गाडी, मांझी बिना नाव, वैसेही लक्ष बिना हमारा ज़ीवन अधुरा है यही हमे लक्ष प्राप्त करने में सहायक होते है ।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

डॉ . रावसाहेब कसबे के शब्द मे, शिक्षा समाज परिवर्तन का प्रभावी साधन है परंतु समाज परिवर्तन की दिशा कौन सी हो यह तय के बिना परिणामकारकता सिद्ध नहीं हो सकती दिशाहीन सामाजिकता मानव को स्वार्थी, अहंकारी और मूर्ख बनाती है इसलिये शिक्षा दुधारी हत्यार है इसका उपयोग विधायक दूरी से विध्वंसक दृष्टि से हो यह तय करने वाली प्रभावी यंत्रणा किसी भी राष्ट्र के पास होना आवश्यक है। इसलिये बर्ट्रांड रसेल ने कहा था men are born innorant not stupid they are made stupid by education ."3

नई राष्ट्रीय शिक्षा निती का मुख्य उद्देश भारत को वैश्विक स्तर पर शैक्षिक रूप से महाशक्ती बनाना तथा भारत में शिक्षा का सार्वभौमिक करण कर शिक्षा की गुणवत्ता को उच्च करना है। नई शिक्षा निती २०-२१ के तहत २०-३० तक शैक्षिक प्रणाली को निश्चित किया गया है वर्तमान में चल रही १० + २ के शिक्षा नीति के मोडेल के स्थान पर पाठ्यक्रम ५ + ३+३+४ की शैक्षिक प्रणाली के आधार पर पाठ्यक्रम को किया जायेगा ।

नई शिक्षा नीति मे बुनियादि तोर पर बदलाव किये गये है नई शिक्षा नीति में शिक्षा क्षेत्र को तकनीकी से भी जोड़ा जायेगा जिसमे सभी स्कूलों में ज्यादा से ज्यादा डिजिटल एकुपमेंट देये जायेंगे। नई शिक्षा नीति मे सभी प्रकार की विषय वस्तु को प्रमुख ता ऊसक्षेत्र की क्षेत्रीय भाषा मे ट्रान्सलेट किया जायेगा जिस्मे शेक्शी क्षेत्र में क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा मिल सके, नई शिक्षा निती के भीतर पढ़ाई में प्रकार के अन्य विकल्प बच्चों को देवं जायेंगे अब दस्वी कक्षा में अन्य विकल्पो रखा जायेगा जिस्मे छात्र कोई सीम न चुनकर अपनी इच्छा अनुसार विषय को चुन सकेगा छात्रों को छठवी कक्षा से ही कॉडीग शिकाई जायेगी डॉ . नागोरा कुंभार के शब्द मे ''छात्रों को व्यक्तिगत जीवन की तयारी, ध्येयनिश्चिती के लिए मार्गदर्शन, कौशल और ज्ञान प्राप्ति के लिए मराठी, हिंदी, अंग्रेजी आधी भाषिक कौशल्य विकसित कर सक्षम बनाना' प्रेरणा देना और सही दिशा निर्देशन करना आवश्यक है.''४

इस प्रकार नई शिक्षा नीति के भीतर मातृभाषा तथा क्षेत्रीय भाषा को भी सम्मिलित किया जायेगा। पांचवी कक्षा तक बच्चों को उनकी मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा पढानेका प्राधान्य भी रखा गया है, जिसमे पाठ्यपुस्तकोमे से लेकर बोलचाल तक क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मानित किया जायेगा। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत कक्षा एकही बच्चों को दो या तीन प्रकार की भाषा से सिखाये जाने की शुरुवात की जायेगी ता की शिक्षा के बोझ को कम किया जा सके। यदि पाठ्यपुस्तकंको शैक्षिक भाषा मे रूपांतरित किया जाता है तो छात्र उसे आसानी से समज सकते है.

नई शिक्षा नीति के भीतर माध्यमिक स्पर्शही बच्चों के पास विदेशी भाषा के सही विकल्प नको खाज आहे का जिस मे बच्चे माध्यमिक स्पर्शही फ्रेंच, चायनीज, जापनीज, स्पेनिस और जर्मन आदी तमाम प्रकार की विदेशी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते है नई शिक्षा निती के भीतर भारत की शिक्षा को वैश्विक स्तर पर मजबूत बनाने के लिए प्रयास किया जा रहा है । नई शिक्षा नीति में छात्रों के शरीर और मन को केंद्र में रखकर छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास भी हो सके इसलिये पढ़ाई के साथ फिजिकल एज्युकेशन को जरुरी बनाने का नियम रखा गया है । स्कूल के हस्तर पर खेल, मार्शल आर्ट, डान्स, गार्डनिंग और योगा जैसे एक्स्ट्रा करिक्युलर ॲक्टिव्हिटीज सुनिश्चित की जायेंगे डॉ. भालचंद्र मुणगेकर के शब्द मे, किसी भी देश के आर्थिक विकास प्रक्रिया में शिक्षा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है। श्रम ही उत्पादकता बढ़ाने में शिक्षा एक प्रमुख साधन है। इस क्षेत्र में प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च तंत्र, व्यावसायिक और निरंतर अधिका इसमे अंतर्भाव होता है। प्रत्येक सीडी महत्वपूर्ण है। इसलिए इसमे गुणवत्ता बढाना अत्यंत आवश्यक है । ''५

नई शिक्षा नीति मे मौजूदा शिक्षा नीति के तहत फिजिक्स ओनर्स के साथ केमिस्ट्री मॅथ लिया जा सकता है। इसके साथ फॅशन डिझायनिंग नही लिया जा सकती थी लेकिन नई शिक्षा नीति में मेजर और मायनर की व्यवस्था होगी जो मेजर है । उसके अलावा मायनर प्रोग्राम लिये जा सकते है। इसके दो फायदे होंगे आर्थिक या अन्य कारण जो लोग ड्राप आऊट हो जाते है । वो वापस सिस्टिम मे आ सकते हैं इसके अलग अलग विश्व में रुची रखते है जैसे जैसे म्युझिक मे रोजी रूची रखते है लेकिन उसके लिए कोई व्यवस्था नही रहती है. नही शिक्षा नीति मे मेजर और मायनर के माध्यम से व्यवस्था रहेगी डॉ. कसबे के शब्द मे ''वेरी क्रोम के अनुसार Education अर्थात शिक्षा शब्द

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

का अर्थ e - ducre , to bring out that which is within man प्रत्येक व्यक्तीने सुप्तावस्था मे स्थित ज्ञान प्रकटीकरण ही शिक्षा है। सामान्य व्यक्ति की समजदार होती है की बहुत डिग्री या प्राप्त की, हात मे पैसा आया पिता, चिंता मिट गई, मनुष्य समाधानी बना वास्तव लग है। क्योंकि यह एक प्रामाणिक प्राणी मात्रा की जरूरत है, लेकिन इससे आगे चल कर मनुष्य को एक आदर्श मानव बनकर समाज में आदर्श निर्माण करने का कार्य शिक्षा शही संभव है,''६

नई शिक्षा नीति के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने के लिए नॅशनल एज्युकेशन पोलिमी बिस बिस के अंतर्गत शैक्षिक पाठ्यक्रम को लचिला बनाये जाने की हर संभव कोशिश की जा रही है फोर्स में रखने के कारण उस शैक्षिक कोर्स बीच में दूसरा कोर्स पढ़ना चाहता है। तो वह अपने पहले कोर्स निश्चित समय अवधित तक रुक्,सरा कोर्स ज्वॉईन कर सकता है। नई शिक्षा निती के तहत २०-३० तक हर जिले में उच्च शिक्षा संस्थान का निर्माण किया जाना शिक्षा के भितर सम्मिलित है।

नई शिक्षा नीति के भितर स्नातक कोर्स को ३०४ साल तक बढ़ाया जा सकता है, जिसमे छात्रोंको बहुविकल्प प्रधान के जायेंगे बहुविकल्पीय उचित प्रमाणपत्र के अनुसार छात्रो को डिग्री दी जाएगी। उदाहरण यदी कोई छात्र एक साल के लिए स्नातक कोर्स की पढाई करता है। तो केवल एक साल की पढाई का प्रमाणपत्र दिया जायेगा और दो साल बाद उसे ॲडव्हान्स डिप्लोमा का प्रमाणपत्र दिया जायेगा और तीन साल बाद उचित प्रमाणात के आधार पर उसे डिग्री जायेगी अंत मे चार साल के बाद छात्र को बैचलर डिग्री के साथ - साथ रिसर्च की डिग्री जायेगी डॉ. ना.य. डोळे के शब्द मे, ''ग्रामीण परिवेश में परिवर्तन के लिए विद्यालय महाविद्यालयीन शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन चार दिवार लांघकर राज्यशास्त्र, अर्थशास्त्र अधिकाज्ञान प्राप्त कर गाव मे प्रबोधन की आवश्यकता है शिवजयंती, अंबेडकर, अण्णाभाऊ साठे, महात्मा बसवेश्वर जयंती, उत्सव आदर्श पद्धतीसे करने की आवश्यकता है । राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से लोकसंख्या, नियंत्रण पर्यावरण, प्रदूषण, अंधश्रद्धा निर्मूलन, किसान सहायता, खेती सुधार शास्त्र पर बळदे ना आर अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक है''७

संक्षेप मे नई शिक्षा नीति के माध्यम से छात्रों के जीवन में परिवर्तन लाकर भारत को विश्व पटल पर प्रत्येक क्षेत्र में गौरव प्रदान करने का महान उद्देश है. कारण शिक्षा व्यक्ती और समाज के भौतिक विकास में एक प्रमुख साधन व्यक्ती को सुसंस्कृत कर व्यक्ती और समाज के जीवन का नैतिक स्तर उंचा उठाने का एक प्रमुख माध्यम है। २१ वी सदी के स्पर्धात्मक युग में भारत हो एक समर्थ राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर लाना सामूहिक प्रयत्न से ही संभव है।

संदर्भ

१. डॉ कुंभार नागोराव, शिक्षणाची संकल्पना व कृती कार्यक्रम, उच्च शिक्षणापुढील आव्हाने संपा नारायण कांबळे चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद झ८९
२. डॉ. निगवेकर अरण, एकविसाव्या शतकातील उच्चशिक्षणाचे उत्तरदाईत्वं, उच्च शिक्षणापुढील आव्हाने संपा. डॉ. नारायण कांबळे चिन्मय प्रकाशन औरंगाबाद झ.२६९
३. डॉ. कसबे रावसाहेब , शिक्षणाची आव्हाने,झ ७२
४. डॉ कुंभार नागोराव , शिक्षणाची संकल्पना व कृती कार्यक्रम,झ.८९.
५. डॉ मुणगेकर भालचंद्र भारतातील उच्च शिक्षणास समोरील आव्हाने, झ. ६५
६. डॉ कसबे रावसाहेब शिक्षणाची आव्हाने झ.७२
७. डोळे ना.य. उच्च शिक्षणासंबंधी समस्या झ. ६२
८. प्रकाश जावडेकर, डॉ रमेश पोखरियाल, मंतव्य दे नवज्योति नई दिल्ली १६ फरवरी २०२२

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad